International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-09-2021, Accepted: 16-09-2021, Published: 02-10-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 64-65

कश्मीर की संस्कृति संदर्भः इकबाल

नीलम कुमारी
पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, भारत

सारांश
संस्कृति जीवन की विधि है। समाज तथा संस्कृति के साथ समान रूप से सम्बन्ध है। समाज के नैतिक, चारित्रिक एवं व्यावहारिक आदर्शों की झलक संस्कृति में मिलती है। संस्कृति संपूर्ण मानवीय इतिहास का सार है क्योंकि इसमें समाज के संपूर्ण गुणों के इतिहास का निचोड़ सम्मिलित होता है। किसी देश की संस्कृति वहां के विचार, धर्म, दर्शन, काव्य संगीत, नृत्य कला, खान–पान, रीति–रिवाज, भाषा आदि में झलकती है। भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है। भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी कश्मीर अपनी संस्कृति में विशिष्ट है। कश्मीर की संस्कृति का आशय कश्मीर की संस्कृति एवं परम्पराओं से है। कश्मीर की संस्कृति में बहुरंगी मिश्रण है, जिसे सम्मिलित रूप से कश्मीरियत के नाम से जाना जाता है। जयश्री रॉय के उपन्यास 'इकबाल' में लेखिका ने कश्मीर की संस्कृति का वर्णन किया है। कश्मीर अपने प्राकृतिक भौगोलिक सौन्दर्य के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए भी प्रसिद्ध है। वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख और बौद्ध दर्शन एक साथ मिलकर एक समग्र संस्कृति की रचना करते हैं। 'कश्मीर' भारत देश का ऐसा खूबसूरत टुकड़ा है जहाँ जाना सब का सपना होता है। हर कोई एक बार वहां जाना चाहता है। भारत के अन्य प्रदेशों से सांस्कृतिक दृष्टि से भिन्न है।

मूलशब्दः परिष्कृत, परिणति, कश्मीर, सूफियाना कलाम, वाज़वान, फिरन, कांगड़ी

प्रस्तावना
संस्कृति समाज में रहकर एक दूसरे से सीखा हुआ व्यवहार है जो एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहता है। संस्कृति शब्द का शाब्दिक अर्थ है संस्कार, शुद्धता या परिष्कृत करना। परम्परा से प्राप्त विचार, मूल्य, कला, शिल्प, वस्तु तथा आदत संस्कृति के अंग हैं। संस्कृति के अनुसार ही किसी समाज की जीवन शैली का निर्माण होता है। इसका सम्बन्ध मनुष्य के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक एवं कलागत जीवन के विविध पहलुओं से है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहते हैं, "मनुष्य की विविध साधनों की सर्वोत्तम परिणति को ही संस्कृति कहते हैं।"[1] साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य में भिन्न–भिन्न संस्कृतियों का समावेश रहता है। साहित्यकार अपनी कृति में समाज विशेष या प्रदेश या राज्य विशेष की संस्कृति को जीवन्त करने का प्रयास करता है। किसी समाज की संस्कृति से आशय है उस समाज में जीवनयापन करने वाले व्यक्तियों का रहन–सहन, खान–पान, आचार–व्यवहार, रीति–रिवाज, लोक–गीत, नृत्य, आस्था, मूल्य, विश्वास जिनका पालन वहां रहने वाले पीढ़ियों से करते आ रहे हैं और वही उनकी पहचान को दर्शाते हैं।

लेखिका जयश्री राय ने 2014 में प्रकाशित अपने तीसरे उपन्यास 'इकबाल' में कश्मीर की संस्कृति को वर्णित किया है। 'कश्मीर' भारत का एक ऐसा हिस्सा जो अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। 'कश्मीर' भारत देश का ऐसा खूबसूरत टुकड़ा है जहां जाना सब का सपना होता है। हर कोई एक बार वहाँ जाना चाहता है। भारत के अन्य प्रदेशों से सांस्कृतिक दृष्टि से भी कश्मीर भिन्न है। कश्मीर घाटी को दुनिया का स्वर्ग कहा जाता है। कश्मीर की संस्कृति कई संस्कृतियों का मिश्रण है। अधिकांश राज्य पर्वत, नदियों और झीलों से ढका हुआ है। वादी–ए–कश्मीर अपने चिनार के पेड़ों, कश्मीरी सेब, केसर, पश्मीना, ऊन और शालों पर की गई कढ़ाई, गलीचों और देसी नून (नमकीन) चाय के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'इकबाल' उपन्यास के केन्द्र में ऑसू और रुलाई है। प्रेम और राष्ट्र के कशमकश से उत्पन्न अतर्द्वन्द्वों के बीच इतिहास के सच को खंगालता यह उपन्यास एक ऐसा आख्यान है, जिसमें धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य, वहां का खानपान, रहन–सहन, कश्मीर के लोगों की जीवन शैली का चित्रण मिलता है। गोवा से कश्मीर आने पर लेखिका को सर्वप्रथम कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य देख मंत्र मुग्ध करती ये पंक्तियां हैं, "...सामने की नीली पहाड़ियों के माथे पर पड़ती धूप बर्फ में प्रतिबिंबित होकर हीरे की तरह दमक रही है। बसंत की हल्की मीठी हवा बादाम के फूलों की भीनी महक से तर है। चीड़ों की डालों पर रेशम से कढ़ी है कुदरत की फुलकारी। एक रंगीन दुशाले सा है सारा परिदृश्य।"[2]

लेखिका ने उपन्यास में कश्मीरी संस्कृति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। कश्मीर के लोक गीत व नृत्यों का वर्णन किया है। कश्मीर के फोक सांग को 'छाकरी' कहते हैं। शादी–विवाह के अवसर पर यह मेंहदी की रस्म में गाये जाते हैं। 'रोफ' कश्मीर का ट्रेडिशनल डांस है जिसे लड़कियों शादी, ईद जैसे खुशी के मौकों पर परफॉर्म करती हैं। शादियों के मौकों पर ऐसे नाच को 'वानउन' कहते हैं। इकबाल जिया को लोक गीत व नृत्य के विषय में बताता है, "हमारे फोक सांग को 'छाकरी' कहते हैं। इन गीतों में अधिकतर फोक, टेल या मुहब्बत के दास्तान सुनाये जाते हैं जैसे लैला–मजनू, युसूफ–जुलेखा की कहानियां। शादियों में मेंहदी की रात ये गीत खास कर गाये जाते हैं। ... रौफ तो ट्रेडिशनल डांस है, जो लड़कियां शादी, इर्द जैसे खुशी के मौकों पर गाती हैं परफार्म करती हैं। इट्स अ ग्रुप डांस।"[3]

सूफियाना कलाम की जानकारी भी दी गई है, "फिफ्टीन सेंचुरी के आसपास ईरान में इस यौसिकी का जन्म हुआ था। बहुत सारे साजों का इस्तेमाल होता है इसें संतूर, वासुल, तबला, सितार और हारमोनियम आदि का इसमें गाने के साथ नाचा भी जाता है जिसे हाफिज नगमा कहते हैं। फिर लादिशाह भी एक तरह का गीत है जिसमें मौजूदा सियासी हालातों पर सटायर होता है ...।"[4]

कश्मीरी जलपान में नून चाय (नमकीन चाय) और कहवा उनकी खास पसंद है। सुबह नाश्ते में कश्मीरी नून चाय के साथ एक खास किस्म का ब्रेड खाते हैं जिसे 'लवासा' कहते हैं। कहवा कश्मीर का शाही जलपान है। इसे खास मौकों पर बनाया जाता है और यह कई प्रकार का होता है। उपन्यास में इकबाल द्वारा कश्मीरी कहवा बनाने की विधि बताई गई है, "ग्रीन टी में कश्मीरी केसर, मसाले, बादाम और अखरोट डालकर बनाया जाता है। कुद लोग दूध भी मिलाते हैं। तरकीबन बीस तरह के कहवे होते हैं।"[5]

कश्मीर में विवाह आदि समारोह में 'वाज़वान' का विशिष्ट महत्त्व है। परम्परागत कश्मीरी दावतन को 'वाज़वान' कहते हैं। उपन्यास में भी इसका उल्लेख किया गया है। "हां, वाज़वान! यह कश्मीर का बहुत मशहूर खाना है। शादी ब्याह औरर खास मौकों पर बनता है। इसे बनाने वाले भी कुछ खास लोग होते हैं जो खानदानी तौर पर इसे बनाने में माहिर होते हैं ... इसमें तकरीबन छबीस तरह की डिशेज होती हैं। अधिकतर मीट और फिश की ...।"[6]

इसे परोसना भी एक कला है। इसे बीच में एक बड़ी तश्तरी में सजाकर परोसा जाता है। इस कला का दृश्य भी उपन्यास में चित्रित है, "बड़ी सी तश्तरी में बीच में चावल होता है, उसके चारों ओर सजा होता है चार सिक कबाब, चार टुकड़ा मेथगाज़, दो ताबाकमाज, फिर भूना हुआ लैमचाम, एक सफेद कोकूर, एक जाफरान कोकूर, साथ में केसर डली, दही, सलाद, चटनी ... ।"[7]

पहनावे में फिरन वहां की सर्दियों में पहनने वाला परम्परागत पहनावा है। वहां की एक अन्य विशेषता यह है कि वहां सर्दियों में लीाग फिरन के अन्दर कांगड़ी लेकर मखमली कालीन बिछाकर धरती पर बैठना अधिक पसंद करते हैं। लेखिका ने कश्मीर में पाये जाने वाले देवदार, पाइन, भूदाल, केओल, चिनार आदि पेड़ों का भी वर्णन किया है।

कश्मीर की मेहमानवाज़ी भी उनकी संस्कृति की खासियत है। कश्मीर आतंकवाद के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। किन्तु इनके भीतर अतिथि देवो भव की भावना निहित है। इनकी अतिथी भक्ति का नमूना लेखिका ने पेश किया है। कश्यमीर के लोग दहशतगर्दी के वातावरण में भी मेहमान (चाहे वह किसी भी धर्म का हो) का खातिरदारी अच्छे ढंग से करते हैं। उपन्यास में जिया जैनब के घर जाती है जो विधवा है। उसका पिता देश के लिए शहीद हुआथा। लेखिका उनकी मेहमानवाज़ी का वर्णन इस प्रकार करती है, "खाना गले से नीचे नहीं उतर रहा था। मगर वह बड़े प्यार से आग्रह कर–करके मुझे खिलाती रही थी – नादूर रोगनजोश (कमलनाल की सब्जी), चमन ओलू (आलू पनीर की सब्जी), याखनी, तीनया पुलाव (मटन पुलाव) ... कश्मीर की मेहमानवाज़ी का नमूना मुझे रोज़ ही कहीं न कहीं देखने को मिल रहा था।"[8] भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवतुल्य माना जाता है यही कश्मीरी संस्कृति में भी झलकता है।

हिन्दू–मुस्लिम वैर–विरोध, साम्प्रदायिक हिंसा के लिए कश्मीर विश्वभर में प्रसिद्ध है। किन्तु लेखिका ने उपन्यास में इनके भीतर आपसी भाईचारे का भी वर्णन किया है। अशोक कौल के साथ बातचीत करते हुए लेखिका पूछती है कि पंडितों के विस्थापन के बाद आपके मुस्लिमों (कश्मीर के) से कैसे व्यवहार हैं? इस पर वे कहते हैं कि कश्मीर में ज्यादा ठंड पड़ने पर हमारे कश्मीरी भाई जम्मू आते हैं तो हमें लगता है हमारे बिछड़े भाई मिल गए हैं। अशोक कौल के शब्दों में, "आप यकीन नहीं करेंगी, हमे लगता है हमारी ज़मीन से हमारे रिश्तेदार आ गये हैं। बिछुड़े हुए परिवार की तरह हम आपस में मिलते हैं ... ।"[9]

मुगलों ने कश्मीर में शैव फलसफा, वेदांत आदि की शिक्षा दिक्षा ली थी। इसका उल्लेख भी मिलता है "देखिये, मुगलों की देन। यहीं पर आकर शाहजहां के बेटे दाराशिकोह ने शैव फलसफा, वेदांत आदि की तालीम ली थी। मौसिकी, रक्स नृत्य आदि के स्कूल खोले थे।"[10]

चश्माशाही में संत कवयित्री इस भवानी के बने स्मारक का अध्यात्मिक महल बनाया है। कश्यप ऋषि, नागों के नेता नीलनाग का वर्णन मिलता है। राष्ट्र प्रेम भी मिलता है।

अतः उपन्यास में कश्मीर घाटी की संस्कृति के अतिरिक्त लेखिका ने वहां की राजनीतिक स्थिति, विस्थापितों की पीड़ा, आतंक से प्रस्त आम जन को व्यक्त किया है। लेखिका मूल रूप से बिहार की है। विगत तीस वर्षों से गोवा में रह रही है। कश्मीर से मीलों दूर गोवा की संस्कृति में रह रही लेखिका ने कश्मीर की संस्कृति का 'इकबाल' में सुन्दर वर्णन किया है। यह उपन्यास कश्मीर और कश्मीरियत के नाम पर अपनी–अपनी सुविधा से अपनाए गए चश्मे को त्यागकर घाटी को विशाल धरातल पर देखने की मांग करता है। अपनी प्राकृतिक भौगोलिक सुंदरता और अनोखी संस्कृति के कारण ही कश्मीर विश्व के लिए आर्कषण का केन्द्र बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, पृ. 64
2. जयश्री रॉय, इकबाल उपन्यास, पृ. 17
3. वही, वही, पृ. 18–19
4. वही, वही, पृ. 19–20
5. वही, वही, पृ. 21–22
6. वही, वही, पृ. 22
7. वही, वही, पृ. 22–23
8. वही, वही, पृ. 71
9. वही, वही, पृ. 86
10. वही, वही, पृ. 101